ब्रह्मचर्य

अपने बाल्य काल से ब्रह्मचर्य की चर्चा सुनते आ रहे हैं । ब्रह्मचर्य के लिये अच्छी अच्छी पुस्तकें लिखी जाती हैं, पत्रों में उत्तम लेख निकलते हैं, व्याख्यान दिये जाते हैं और ब्रह्मचर्य प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिये कितनी ही संस्थाएं खोली जा रही हैं इस प्रकार के जितने भी प्रयत्न सच्चे भाव से किये जाते हैं वह ब्रह्मचर्य प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिये बड़े सहायक हैं और यह देखा जाता है कि इस संबन्ध में बहुत कुछ हो रहा है परन्तु जब इन सब बातों का फल कम निकलता है और जो प्रत्यक्ष है तो निश्चय करना पड़ता है कि इस संबन्ध में अभी हमारी त्रुटियां बहुत हैं और जब तक त्रुटियों को दूर नहीं कर दिया जावेगा यथार्थ फल का मिलना भी असंभव है । इस प्रणाली को पुनर्जीवित करने में सबसे कठिन समस्या यह है कि शास्त्र की मर्यादा के अनुसार चलने वाले आदमी नहीं मिलते । यह मानी हुई बात है कि बालकों को ब्रह्मचर्य व्रत पर चलाने के लिए यह परमावश्यक बात है कि उन के संरक्षक और अध्यापक भी ब्रह्मचर्य व्रतधारी हों । वह चाहे ब्रह्मचारी हों चाहे वानप्रस्थी हों । जिसने ब्रह्मचर्य और तपस्या का व्रत ले रक्खा है, जो त्यागी है जिस के भाव पवित्र हैं वही बालकों के भावों को पवित्र रख सकता है । ब्रह्मचर्याश्रम वानप्रस्थ के साथ बन्धा हुआ है । यदि लोग तपस्वी वानप्रस्थी बनने को तय्यार नहीं हैं तो ब्रह्मचर्य का उद्धार होन असम्भव है । यदि सौभाग्य से कोई तपस्वी और संयमी आदमी भी मिल जावे तो यह रुकावट पड़ती है कि लोग अपने बालकों को ब्रह्मचारी बनाने के लिये देना नहीं चाहते, शायद आप कहें कि नहीं यदि यह बात होती तो एक एक गुरुकुल में तीन तीन सौ लड़के कहां से आते ? यह सब, लोगों ने ब्रह्मचारी बनने के लिये ही दिए हैं । उसके उत्तर में हमारा कहना है कि सम्भव है किसी किसी ने इस विचार से भी अपने लड़के को दिया हो परन्तु कम से कम ९५ फीसदी लड़के पढ़ाई के लिये ही दिये जाते हैं अपने बालकों को ब्रह्मचारियों में दाखिल करते समय यदि लोग यह निर्णय करके बालकों को दाखिल करें कि यहां पर शास्त्र की मर्यादा के अनुसार काम होता है या नहीं तो आज जो ब्रह्मचर्याश्रम खुले हुए दिखाई देते हैं प्रायः सब बन्द हो जावें । आज कल लोगों को विद्या का इतना मोह है कि जबतक पढाई की लम्बी चौड़ी स्कीम उनके सामने न रक्खो वह सन्तुष्ट ही नहीं होते । पढ़ाई ही नहीं वस्त्र और भोजन भी अपने मन के अनुकूल चाहते हैं । तपस्या से जी घबराता है और यदि पिता समझाने से मान भी जावे तो माता का कलेजा अधर होजाता है । वह अपने बालक को केवल एक लंगोटी बान्धे हुए नङ्गे बदन नहीं देख सकती क्योंकि वह तपस्या के रहस्य को जानती ही नहीं । यदि हज़ारों मनुष्यों में कोई वीर और समझदार माता पिता अपने पुत्र को ब्रह्मचर्य की कठिन तपस्या के लिए देना भी चाहें तो रखने वाले ऐसे अनुभवी नहीं मिलते कि जिन्होंने स्वयं तप

करके अनुभव प्राप्त किया हो कि वर्तमान समय में ब्रह्मचर्य किस भान्ति पालन किया जा सकता है। वह मनु के श्लोक और वेद के मंत्रों को जानकर ही ब्रह्मचर्य विज्ञान के आचार्य बने हुए हैं । इन सब बातों से ब्रह्मचर्य प्रणाली के पुनरुद्धार करने में घोर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा परन्तु यह नितान्त आवश्यक है । यदि हम ब्रह्मचर्य का पुनरुद्धार नहीं कर सकेंगे तो हमारी उन्नति असम्भव है । हमारा सबसे आवश्यक और पहला सुधार ब्रह्मचर्य है ।